अक्तूबर २०१७

कीमत ₹ १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

ऐसा मेरे साथ हो तो?

संपादकः
डिम्पल मेहता
वर्ष : ५ अंकः ७
अखंड क्रमांकः ५५
अक्तूबर २०१७
....
संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यू.एस.ए. : ६० डोलर
यू.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

अक्रम एक्सप्रेस

ऐसा मेरे साथ हो तो?

संपादकीय

बालमित्रों,

कई बार ऐसा होता है कि जब हमारा कोई काम, सामने वाले को दुःख या नुकसान पहुँचा रहा होता है, तब हमें उसका पता ही नहीं चलता। जब कोई इस बारे में हमें बताता है तो हम हँसी में उड़ा देते हैं। क्योंकि हमें वह बहुत बड़ी बात नहीं लगती। जैसे उसकी हमें कोई परवाह ही नहीं है।

क्या कभी सोचा है कि ऐसा क्यों होता है? क्या हमारा हृदय नहीं धड़कता? या हम सामने वाले का दुःख नहीं समझ पाते?

यदि आपको ऐसा कुछ अनुभव होता है, तो इस अंक को ज़रूर पढ़िए। परम पूज्य दादाश्री ने इस अंक में किसी भी जीव के प्रति अनुकंपा जागृत करने का सीधा और सरल उपाय बताया है।

तो आइए, इस अंक को पढ़कर हम मानवता की ओर कदम बढ़ाएँ...

-डिम्पल मेहता

Happy Diwali

ज्ञानी कहते हैं...

नीरू माँ : जब हम कुछ भी करते हैं और सामने वाले व्यक्ति पर उसका असर होता हो, तो हमें ज़रूर सोचना चाहिए कि मेरे साथ ऐसा हो तो? जैसे हम रास्ते पर जा रहे हैं और हमें किसी का पाँच हज़ार का पर्स मिला, तो पाँच हज़ार देखते ही, खुश हो जाएँ कि इतने सारे मिल गए! ऐसा लगे कि आज लॉटरी लग गई। वास्तव में तब मुझे यह सोचना चाहिए कि "मेरे साथ ऐसा होता तो!" जब मेरा पर्स खो जाएगा तब हमें कैसा लगेगा? इसी तरह अभी जिसका खो गया है उसे होता होगा। अगर हम इस तरह सोचेंगे तो मानवधर्म में आए, ऐसा कहा जाएगा।

मानव धर्म किसे कहते हैं?

अगर आप सेठ हो और अपने नौकर को बहुत डाँटते हो, उस समय आपको सोचना चाहिए कि अगर मैं नौकर होता तो क्या होता? ऐसा सोचते ही आप उससे ठीक से बात करेंगे, ज्यादा नहीं बोलेंगे। जब आप किसी का नुकसान कर रहे हों और उस समय ऐसा ख्याल आए कि यदि कोई मेरा नुकसान करे तो मुझे कैसा लगेगा?

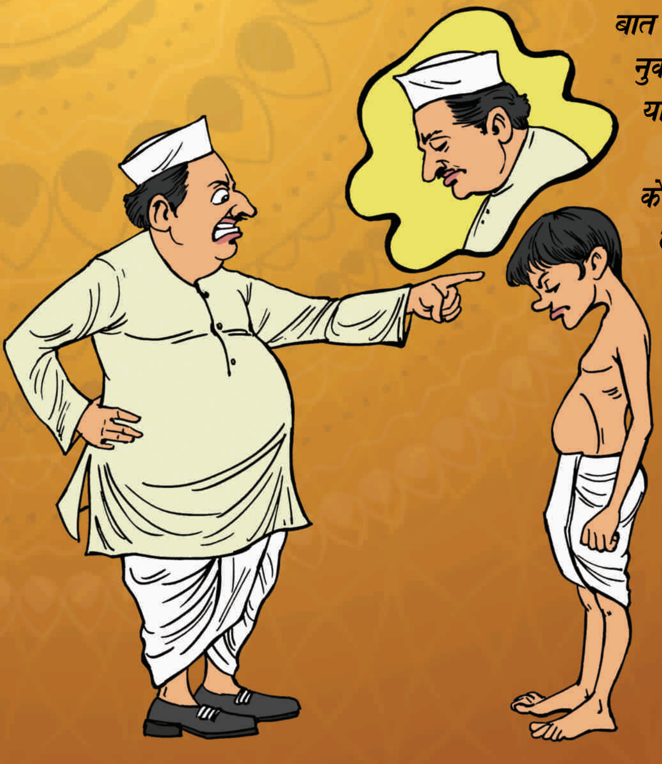

इसलिए हमें जो अनुकूल आता है वैसा ही सभी के साथ अनुकूल रखना चाहिए कि मुझे दुःख होता है, तो उसे दुःख क्यों नहीं होगा? अगर कोई हमारा कुछ चुरा लेता है तो हमें दुःख होता है, तो किसी की चोरी करते समय हमें सोचना चाहिए या नहीं? किसी को दुःख हो ऐसा कैसे कर सकते हैं! अगर कोई हमसे झूठ बोलता है तो हमें दुःख होता है तो हमें भी ऐसा सोचना चाहिए।

इसलिए हमें जो अच्छा नहीं लगता है उसे किसी और को नहीं देना चाहिए।

अनुभव का चमत्कार

कुछ गिरने की आवाज़ सुनकर, मम्मी किचन से बाहर आई, "फिर से तुम दोनों का रिमोट के लिए झगड़ा शुरू हो गया। वही चैनल के लिए किचकिच।" मम्मी ने टी.वी. बंद कर दिया और नीचे से टूटा हुआ रिमोट उठाकर तेजस के हाथ में दिया, "अब इस रिमोट को रिपेयर करवा देना।" और अंदर जाते हुए बोलीं, "पता नहीं कब तुम दोनों की चॉइस एक होगी।"

तेजस ने अपने छोटे भाई चिराग को गुस्से से देखा। दाँत भींचकर उसे धमकाते हुए कहा, "अब देख ले, क्या मिला? मेरी बात नहीं मानी तो टी.वी. ही बंद हो गया न। चुपचाप गेम चलने दी होती तो? स्टूपिड।"

रुंआसा चिराग मुश्किल से बोला, "लेकिन भाई, आपको पता है न कि इस गेम में मुझे कुछ पता नहीं चलता। मुझे तो कार्टून चेनल देखना ही पसंद है।"

तेजस ने चिराग के सिर पर चपत मारी और बोला, "कार्टून देख-देखकर तू भी कार्टून जैसा ही हो गया है। मूर्ख ही बने रहना है या फिर मेरी तरह स्मार्ट बनना है?"

तभी तेजस के फोन की घंटी बजी...

"हाँ यार, आ रहा हूँ। नहीं भूला प्लान को। और सब आ गए? ओ.के., सी यू" तेजस ने फोन पर बात खत्म करके चिराग से कहा, "देखा, मेरी कॉलेज में मैं कितना फेमस हूँ।"

चिराग ने नम्रता से पूछा, "भाई, मुझे अपने साथ ले जाओगे? प्लीज़!"

तेजस ने साफ मना कर दिया, "तुझे ले जाकर मेरे दोस्तों के सामने अपनी बेइज्जती करवानी है क्या? फोरगेट इट" और तेजस बाहर चला गया।

चिराग का गला भर आया और वह दौड़कर अपने कमरे में चला गया। मम्मी उसके पीछे-पीछे गई।

मम्मी ने चिराग के सिर पर हाथ फिराया, "क्या हुआ मेरे राजा बेटे को?"

चिराग मम्मी की गोद में सिर रखकर रोने लगा, "मम्मी, मैं भाई से छोटा हूँ, इसमें मेरी क्या गलती है? वे बड़े हैं, इसलिए उन्हें ज्यादा समझ में आता है। लेकिन कभी तो वे भी मेरे जितने होंगे न?"

मम्मी ने चिराग को पानी पिलाया। फिर उसका हाथ अपने हाथ में लेकर बोलीं, "हाँ बेटा, और एक दिन तू भी भाई जितना बड़ा हो जाएगा।"

"लेकिन जब भी हम कुछ साथ में करते हैं, तब वे हमेशा दादागिरी

करते हैं। मुझे हमेशा उनकी बात माननी पड़ती है। मैं कितना भी बड़ा हो जाऊँ, उनसे तो हमेशा छोटा ही रहूँगा न?" भुनभुनाते हुए उसने शिकायत जारी रखी, "तो मुझे हमेशा उनका बॉसिज़्म सहन करना पड़ेगा?"

मम्मी चिराग को शांत करते हुए बोलीं, "बेटा! वह तेरा बड़ा भाई है। तुझे प्रेम भी उतना ही करता है। तेरे बिना उसे बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता। अरे, थोड़ी-बहुत मस्ती को दादागिरी समझकर उदास नहीं होना चाहिए। बड़े होकर बाहर की दुनिया का सामना करने में ये सभी अनुभव काम आएँगे।" अपनी साड़ी के पल्लू से मम्मी ने चिराग का मुँह पोछा, "चल अब खाना खा ले? चियर अप।"

खाना खाते-खाते चिराग बस यही सोच रहा था, "मम्मी मेरी बात नहीं समझ पाएँगी, कोई नहीं समझ पाएगा।"

रात होने पर वह अपने रूम में गया। बालकनी में जाकर तारों की ओर देखने लगा, "जब से समझदार हुआ हूँ तब से एक दिन भी ऐसा नहीं गया कि भाई ने मेरा मज़ाक ना उड़ाया हो।"

तभी उसे टूटता हुआ तारा दिखा। आदत के अनुसार, वह सोचने लगा "क्या विश करूँ?"

तेजस कब उसके पीछे आकर खड़ा हो गया, उसे पता ही नहीं चला। आँखें बंद करके चिराग कुछ बोल रहा था। तेजस ने कान नज़दीक किए।

"आई विश, भाई छोटा बन जाए और मैं बड़ा बन जाऊँ। तो मेरी सभी तकलीफें दूर हो जाएँगी..."

तेजस के ज़ोर से हँसने पर चिराग डर गया। पीछे बड़े भाई को देखकर वह चौंक गया। मुँह फुलाकर अपने पलंग पर जाकर सो गया।

तेजस भी अपने पलंग पर लेट गया। चिराग के सामने देखकर हँसने लगा, "स्टूपिड, अभी भी कैसी बातों पर विश्वास करता है।" और हँसते-हँसते कब नींद आ गई उसे पता भी नहीं चला।

सुबह हो गई... तेजस के मोबाइल में जॉगिंग पर जाने के लिए अलार्म बजा। अलार्म बंद करने के लिए उसने बाँए हाथ के टेबल पर बंद आँखों से ही हाथ लंबा किया। हाथ हवा में लटक गया। आँख खोलकर देखा तो न वहाँ टेबल था ना ही मोबाइल।

तेजस झट से बैठ गया। उसने आसपास नज़र घुमाई। देखा तो टेबल दाईं ओर था। अरे... वह तो चिराग के पलंग पर सो रहा था। और उसके पलंग पर चिराग सो रहा था। उसने सोचा, "मुझे अच्छी तरह से याद है, रात को मैं अपने पलंग पर ही सोया था। और चिराग तो मेरे पलंग पर सोने की कभी हिम्मत ही नहीं करेगा।" अलार्म की घंटी बज ही रही थी। देखा तो वह चिराग के पास के टेबल पर पड़े हुए मोबाइल में बज रही थी।

तेजस ने मोबाइल हाथ में लिया। लेकिन यह क्या? उसके मोबाइल के वोल पेपर पर चिराग का

फोटो। उसने फिर से आँखें मसलकर देखा। फिर भी वही दिख रहा था। कुछ समझ में नहीं आ रहा था। बाथरूम जाने के लिए पलंग से नीचे उतरा तो उसे अपने पैर छोटे लगे। अरे हाथ भी छोटे लग रहे थे। मुँह पर हाथ रखा तो मूँछ का एक भी बाल नहीं था।

अचानक तेजस को कुछ याद आया। मन में एक आवाज़ गूंजी और वह डर गया। “आई विश, भाई छोटा बन जाए और मैं बड़ा बन जाऊँ। तो मेरी सभी तकलीफें दूर हो जाएँगी।”

आईने में अपना प्रतिबिंब देखकर तेजस स्तब्ध हो गया। वह ज़ोर से चिल्लाया, “ए चिराग...उठ!”

आवाज़ सुनकर मम्मी आई, “क्या हुआ तेजस बेटा? और यह कोई तरीका है बड़े भाई को बुलाने का?”

यह सुनकर तेजस ने अपने कान खुजाए। चिराग आग बबूला होकर उठा। चिराग को देखकर तेजस की आँखें फैल गईं। अपनी आँखों पर उसे विश्वास नहीं हुआ। एक रात में सब उल्टा हो गया? वह बड़बड़ाने लगा, “मम्मी यह चिराग है? इतना लंबा?” तेजस को चक्कर आने लगे।

“तेजस क्या बड़बड़ा रहा है? चलो, दोनों जल्दी से फ्रेश हो जाओ, ब्रेक फास्ट रेडी हो रहा है”, ऐसा कहकर मम्मी चली गई।

तेजस के हाथ से चिराग ने मोबाइल छीन लिया और गुस्से से बोला, "मेरे मोबाइल को तूने हाथ कैसे लगाया हं? और सुबह-सुबह क्यों चिल्ला रहा है? स्टूपिड। चल दोनों बेड ठीक कर देना। मैं जॉगिंग करने जा रहा हूँ।"

तेजस का सदमा कम नहीं हुआ था, लेकिन अब परिस्थिति को स्वीकार करने के अलावा और कोई रास्ता भी तो नहीं था, उसका उसे पता चल गया था। छोटे-छोटे हाथों से दोनों बेड ठीक करने में बहुत देर लग गई। वह सदमे में तो था ही, लेकिन साथ ही उसे दुःख और शर्म भी महसूस हो रही थी। मुश्किल से काम खत्म करके बाथरूम में नहाने जा रहा था तब अचानक चिराग आकर अंदर घुस गया और तेजस के मुँह पर धड़ाम से दरवाज़ा बंद हो गया। अंदर से "स्टूपिड" और चिल्लाकर हँसने की आवाज़ सुनाई दी। यह बात कोई नई नहीं थी। रोज़ का ही क्रम था। बस, आज तेजस दरवाज़े के दूसरी ओर था।"

तेजस की आँखे आँसुओं से छलक गई। आज आईने में उसे अपना सच्चा स्वरूप दिखाई दिया। लेकिन अपना कुरूप चेहरा वह सहन नहीं कर पाया। दोनों हाथों से मुँह छिपाकर बोला, "मुझे माफ कर दे भाई। मैंने तो कभी सोचा भी नहीं था कि मेरे व्यवहार से तुझे कितना दुःख होता होगा। प्लीज़, मुझे माफ कर दे, चिराग।" आज खुद के दिए हुए दुःखों का कड़वा स्वाद चखकर तेजस का हृदय पश्चाताप से रो उठा।

"क्या हुआ भाई? आप ठीक तो हो न?" चिराग ने अपने छोटे-छोटे हाथों से तेजस को झकझोरा।

तेजस ने मुँह से हाथ हटाया, तो छोटा सा चिराग उसके सामने खड़ा था।

"आई विश, भाई छोटा बन जाए और मैं बड़ा बन जाऊँ। तो मेरी सभी तकलीफें दूर हो जाएँगी।"

"भाई, आप नींद में क्या बोल रहे थे? कोई भयानक सपना देखा? अरे, आपकी तो आँखें भी नम हैं!"

तेजस झट से बैठ गया और आसपास नज़र घुमाई। "हाँ, चिराग सपना ही था। लेकिन सपने ने तो मेरी आँखें ही खोल दीं।"

चिराग ने तेजस को पानी का गिलास हाथ में दिया, "क्या कह रहे हो भाई?"

तेजस ने दो घूँट पानी पीया और चिराग के सिर पर प्रेम से हाथ फिराकर कहा, "बस कुछ नहीं। चल, मेरे साथ जॉगिंग करने आएगा?"

तेजस का प्रेम देखकर चिराग के उत्साह का पार नहीं था, "सचमुच, भाई? ओ.के., मैं जल्दी से बेड ठीक कर दूँ..."

चिराग का वाक्य पूरा हो उससे पहले तो तेजस फटाफट बेड ठीक करने लगा। चिराग तो देखता ही रह गया। तभी मम्मी की आवाज़ सुनाई दी, "उठ गए तेजस-चिराग? चलो, दोनों जल्दी से फ्रेश हो जाओ, ब्रेक फास्ट तैयार हो रहा है।"

जॉगिंग पर दोनों को साथ निकलते देखकर मम्मी की आँखों में भी चमक आ गई।

"चिराग, आज मैं तुझे अपने फ्रेन्ड्स से मिलवाऊँगा। फिर हम मूवी देखने जाएँगे... तेरा फेवरीट कार्टून मूवी... नया कुँम्फू पान्डा। और फिर तू और मैं और फिर..." दोनों की बातें थोड़ी-थोड़ी सुनाई दे रही थीं।

सहज क्षमा

हमने आपको जो ईमेल भेजा था उसमें सभी जानकारी विस्तार से थी।
लेकिन मुझे आपका कोई ईमेल मिला ही नहीं है।

आचार्य सर ने सुनील की ओर देखा। सुनील की दशा ऐसी हो गई थी कि जैसे काटो तो खून ना निकले। सुनील का चेहरा देखकर सर तुरंत समझ गए।

सॉरी, मि. वोरा। हमारी भूल है। अभी आपको पूरी जानकारी भेज देते हैं।
ऐसा कहकर आचार्य सर और मि. वोरा कॉन्फरन्स रूम से बाहर चले गए।
सुनील को बहुत पश्चाताप हो रहा था। उसने टेबल पर सिर रख दिया।
मैं इतना लापरवाह कैसे हो सकता हूँ? इतना इम्पॉरटन्ट ईमेल भेजना मैं कैसे भूल गया?
तभी विहा रूम में आई,
सुनील, आचार्य सर आपको कैबिन में बुला रहे हैं।
हो गया, आज तो मेरी नौकरी गई।
सुनील ने आचार्य सर की कैबिन पर नॉक किया।

ओह! कम इन सुनील, बैठो। देखो, हमें इस हफ्ते कई काम निपटाने हैं। तुम तैयार हो न?
ऐसा कहकर सर ने सुनील को सभी काम समझा दिए।
सुनील से रहा नहीं गया।
सर, आई एम वेरी सॉरी कि मैं मि. वोरा को ईमेल भेजना भूल गया।
यह क्या? मेरी इतनी बड़ी भूल का तो उल्लेख भी नहीं किया? इतनी बड़ी भूल कर दी फिर भी सर मुझ पर विश्वास रखकर इतना महत्वपूर्ण काम सौंप रहे हैं?
कोई बात नहीं सुनील। इतने सारे कामों में तुम भूल गए होगे। मुझे पता है कि तुम एक ज़िम्मेदार इंसान हो और तुम फिर कभी ऐसी भूल नहीं होने दोगे।
सर के ऐसे शब्द सुनकर सुनील को एक ग़ज़ब की ठंडक हुई।
लेकिन सर, आपके चेहरे पर मेरी भूल के कोई चिन्ह भी नहीं दिख रहे, यह कैसे सँभव है?

२० साल पहले की एक बात है। उस दिन मैं ऑफिस से जल्दी घर आ गया था।
अचानक कमौसमी बरसात होने लगी। खिड़की से बाहर देखा तो मुझे मेरा ग्यारह वर्ष का बेटा शिव, बरसात के पानी में भीगता, ठिठुरता घर की ओर आते हुए दिखा।
मैंने दरवाज़ा खोला। शिव मुस्कराया।
डैडी, आप घर जल्दी आ गए?
हाँ बेटा। लेकिन यह क्या? तू तो कितना भीग गया है। साइकिल लेकर गया होता तो इतना नहीं भीगता।
हाँ डैडी। पता है।
बेटा, यदि तुझे पता है तो तू साइकिल लेकर क्यों नहीं गया? टाइम वेस्ट क्यों करता है?
शिव ने मेरे सामने देखा और मुझे तुरंत याद आया कि बहुत समय से उसने मुझे अपनी साइकिल का पन्चर ठीक करवाने के लिए कहा था। वह बात मैं बिल्कुल ही भूल गया था।

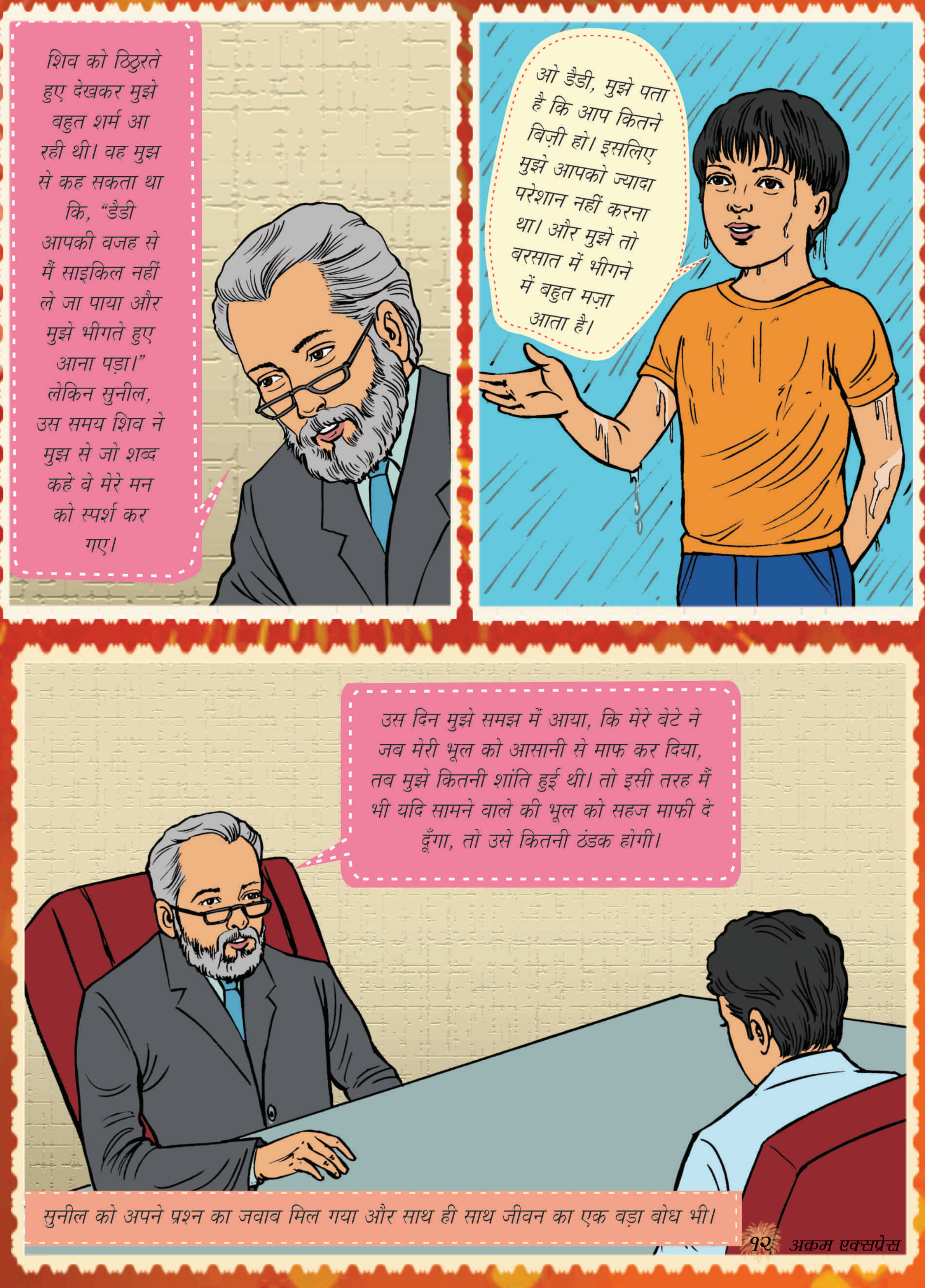

शिव को ठिठुरते हुए देखकर मुझे बहुत शर्म आ रही थी। वह मुझ से कह सकता था कि, “डैडी आपकी वजह से मैं साइकिल नहीं ले जा पाया और मुझे भीगते हुए आना पड़ा।” लेकिन सुनील, उस समय शिव ने मुझ से जो शब्द कहे वे मेरे मन को स्पर्श कर गए।
ओ डैडी, मुझे पता है कि आप कितने बिज़ी हो। इसलिए मुझे आपको ज्यादा परेशान नहीं करना था। और मुझे तो बरसात में भीगने में बहुत मज़ा आता है।
उस दिन मुझे समझ में आया, कि मेरे बेटे ने जब मेरी भूल को आसानी से माफ कर दिया, तब मुझे कितनी शांति हुई थी। तो इसी तरह मैं भी यदि सामने वाले की भूल को सहज माफी दे दूँगा, तो उसे कितनी ठंडक होगी।
सुनील को अपने प्रश्न का जवाब मिल गया और साथ ही साथ जीवन का एक बड़ा बोध भी।

चलो ढूँढें
पास वाले
बॉक्स में से
नीचे दी
गई चीज़ों
को और
उस पर
राउन्ड
करें।

ऐतिहासिक गौरवगाथा

शीतल नामक एक राजकुमार था। गुरु भगवंत की आध्यात्मिक वाणी सुनकर उसका सांसारिक भाव पिघल गया। उसने गुरु से दीक्षा अंगीकार की। साधुपने में शीतल मुनि ने बहुत तप-साधना करके क्रमानुसार शीतलाचार्य बने।

शीतलाचार्य की गुणवती नामक एक सांसारिक बहन थीं। गुणवती अपने चारों बेटों को मामा जैसा तेजस्वी बनने की सलाह देती थीं। बड़े होने पर चारों बेटों ने एक विद्वान गुरु से दीक्षा ली। एक दिन गुरु जी की आज्ञा लेकर चारों भानजे, मामा महाराज को वंदन करने गए।

मामा महाराज शीतलाचार्य जिस गाँव में थे, उस गाँव की सीमा पर वे पहुँच गए। रात होने को थी इसलिए वे गाँव के बाहर कहीं रुक गए और शीतलाचार्य को संदेश भेजा, "आपकी संसारी बहन के पुत्र दीक्षित होकर आपको प्रणाम करने के लिए आए हैं। लेकिन रात होने की वजह से उन्होंने गाँव में प्रवेश नहीं किया है।"

यह समाचार सुनकर, शीतलाचार्य के मन में उनके प्रति पुत्र-प्रेम उत्पन्न हुआ।

उस रात चारों भानजे-मुनियों को शुभ ध्यान करते हुए केवलज्ञान प्रकट हो गया। सुबह हुई। समय हो गया, फिर भी भानजे-साधु नहीं आए। इसलिए शीतलाचार्य खुद ही उनसे मिलने गए। भानजे-साधुओं ने मामा महाराज को आते हुए देखा लेकिन उनका स्वागत नहीं किया। शीतलाचार्य को अकुलाहट हुई। उन्होंने गुस्से से पूछा, "पहले किसे वंदन करूँ?"

एक ने कहा, "जैसी आपकी मर्ज़ी।"

यह जबान सुनकर शीतलाचार्य को बुरा लगा। मन में गुस्सा भी आया, "ये सब कितने अविनयी और उद्धत हैं। एक तो मेरा सम्मान नहीं किया और ऊपर से कहते हैं, जैसी आपकी मर्ज़ी।" फिर भी उन्होंने गुस्से से चारों को वंदन किया।

एक भानजे, जो अब केवली भगवंत बन गए थे, वे बोले, "आपने सिर्फ हाथ जोड़कर द्रव्य वंदन किया है। लेकिन आपने भाव बिगाड़कर वंदन किया है इसलिए आपके कषाय में वृद्धि हुई है। अब आप भाव से वंदन कीजिए।"

शीतलाचार्य ने तुरंत ही कहा, "मैंने सिर्फ हाथ जोड़कर द्रव्य वंदन किया है और भाव बिगाड़े हैं, ऐसा आपको कैसे पता चला? मेरे कषाय में वृद्धि हुई है ऐसा आप कैसे कह सकते हो? क्या आपको केवलज्ञान हुआ है?"

केवली भगवंत ने कहा, "हाँ"।

यह सुनकर आचार्य का अंतर पश्चाताप से रो उठा, "अरेरे, मैंने केवली भगवंतों के प्रति भाव बिगाड़े! यह मैंने कितनी भयंकर भूल कर दी।"

खूब दिल से उन्होंने चारों भगवंतों को भाववंदन किया और अपनी गलती सुधारी। भाव वंदन और पश्चाताप के बल से उन्होंने आंतरिक विकास किया और केवलज्ञान प्राप्त किया।

तो मित्रों, शीतलाचार्य के दृष्टान्त से जब हम हाथ जोड़कर वंदन करें, तब अंदर के भाव का महत्व समझें। अंतर के परिपूर्ण भावपूर्वक किया हुआ वंदन फल देता है।

रियल लाइफ स्टोरी

१

मदर टेरेसा

मदर टेरेसा के एक अनुभव का वर्णन।

एक रात एक व्यक्ति मदर टेरेसा के घर आया और बोला, "एक परिवार में आठ बच्चे हैं। वे कई दिनों से भूखे हैं।"

मदर टेरेसा उनके घर खाना लेकर गए। उस परिवार के चेहरों पर कोई दुःख या निराशा नहीं थी, लेकिन भूख का दर्द था।

मदर टेरेसा ने बच्चों की माँ को चावल दिए। माता ने चावल को दो भागों में बाँटा और एक भाग लेकर बाहर गई। जब वह वापस लौटी तब मदर टेरेसा ने उससे पूछा, "कहाँ गए थे ?"

उस बहन ने जवाब दिया, "मेरे पड़ोसी के वहाँ। वे भी भूखे हैं।"

इस घटना को ध्यान में रखकर मदर टेरेसा ने अपनी डायरी में लिखा, "मुझे इस बात का आश्चर्य नहीं हुआ कि उस बहन ने अपने भाग का खाना दूसरे को दे दिया। गरीब बहुत उदार होते हैं। लेकिन मुझे इस बात का आश्चर्य हुआ कि उस बहन को पता था कि उसके पड़ोसी भी भूखे हैं।

जब कोई खुद दुःखी होता है तब वह अपने दुःख में इतना खोया हुआ होता है कि वह औरों के दुःख के बारे में सोचता भी नहीं है।"

और इस तरह, मानवता की मूर्ति समान मदर टेरेसा ने उस दिन एक गरीब का मानवता का धन परखकर, मन ही मन उसकी प्रशंसा की।

२ जोश फेरीन

अमरीका के युहाट स्टेट के जोश फेरीन नामक एक व्यक्ति ने अपना पहला घर खरीदा। घर में सामान रखने से पहले वे अपनी पत्नी को लेकर नए घर गए। घर के गैरज में एक जगह पर उन्होंने एक कपड़ा लटका हुआ देखा। उन्हें जिज्ञासा हुई और उन्होंने वह कपड़ा खींचा।

देखा तो वहाँ दुछत्ती थी। जोश ने दुछत्ती के अंदर झांककर देखा तो वहाँ पुराने जमाने के पीतल के बॉक्स पड़े हुए थे। बॉक्स खोले तो उनके आश्चर्य का पार नहीं था। बॉक्स के अंदर करीब चालीस हज़ार डॉलर की रकम थी।

जोश फेरीन को पता था कि थोड़े समय पहले घर के मूल मालिक की मृत्यु हो गई थी। उन्होंने घर के मालिक के बेटे का संपर्क किया और सब बात बता दी।

जोश फेरीन ने घर के मालिक के बेटे से कहा, "मैं एक पिता हूँ और मुझे अपने बच्चों के भविष्य की फिक्र है। इसलिए मैं समझ सकता हूँ कि आपके पिता जी ने यह धन, आपके कठिन समय के लिए बचाकर रखा होगा। आज मुझे उनके जीवन का अधूरा काम पूरा करने का अवसर मिला है।" ऐसा कहकर, जोश ने सारी रकम घर-मालिक के बेटे को सौंप दी।

औरों के पिता की जगह लेकर जोश ने सोचा और इसीलिए एक क्षण के लिए भी उन्हें वह रकम रखने का प्रलोभन नहीं हुआ।

और अंत में...

एक दिन एक व्यक्ति अपने घर के बगीचे के बाहर बोर्ड लगा रहा था, "पपीस् (पिल्ले) फॉर सेल"

तभी एक छोटे बच्चे ने आकर उससे पूछा, "मेरे पास इतने पैसे हैं। मुझे एक पिल्ला मिलेगा?"

"हाँ, हाँ, क्यों नहीं?" कहकर व्यक्ति ने आवाज़ लगाई, "डोली, डोली..."

मम्मी (पिल्ले की माँ) अपने पिल्लों को लेकर बाहर दौड़कर आई। यह देखकर बच्चे की आँखों में चमक आ गई।

थोड़ी देर बाद एक छोटा सा पिल्ला निकला। वह सभी से अलग दिख रहा था। उसके पैर में खामी थी और वह चल नहीं पा रहा था।

बच्चे ने उस पिल्ले की ओर इशारा करके कहा, "सर, मुझे वह पिल्ला चाहिए।"

व्यक्ति ने हँसकर कहा, "बेटा, इस पिल्ले को लेकर क्या करोगे? तुम तो कभी इसके साथ खेल भी नहीं पाओगे।"

बच्चे ने धीरे से अपने एक पैर की पेन्ट ऊँची की और स्टील के रॉड के साथ जुड़ा हुआ जूता दिखाया, "सर, खेल तो मैं भी नहीं सकता। इसलिए तो मैं उसे ठीक से समझ सकूँगा।"

मीठी यादें

यु.के. में सत्संग था। हॉल में करीब ४००-५०० व्यक्ति बैठे थे। नीरू माँ ने हॉल में पहुँचकर सीमंधर स्वामी और दादा के फोटो पर हार चढ़ाया और अपनी कुर्सी पर आकर बैठ गए। नीरू माँ सत्संग शुरू करने के लिए तैयार थे।

लेकिन दूसरी ओर कैमरे का सेटिंग चल रहा था। सत्संग का लाइव रिले करना था। जो भाई कैमरे का सेटिंग कर रहा था वह नया था और पहली बार ही यह काम कर रहा था। काम बहुत धीमा चल रहा था। समय का महत्व समझकर दूसरे भाई ने आकर कैमरा सेटिंग का काम संभाल लिया और काम निपटा दिया।

उस रात नीरू माँ ने उस भाई से पूछा, "उस भाई का कैमरे का काम तुमने ले लिया, तो फिर उसके बाद तुमने उसे बुलाया?"

इस भाई ने जवाब दिया, "नहीं, नीरू माँ।"

नीरू माँ ने कहा, "सत्संग थोड़ा देर से शुरू होता तो हमें क्या फर्क पड़ता है? लेकिन ऐसे फटाक से किसी से काम नहीं लिया जाता। वह भाई नया है। इसलिए स्वाभाविक है वह काम उसे नहीं आता था, तो आपको उसे समझाना चाहिए। लेकिन इस तरह उसका काम लेकर उसका दिल नहीं तोड़ना चाहिए।"

फिर तुरंत उन्होंने पूछा, "आज वे दादा के समय के महात्मा आए थे तो किसी ने उनका कॉन्टैक्ट नंबर लिया?"

यह सुनकर उस भाई ने सोचा कि, नीरू माँ की दृष्टि एक साथ कितनी जगह पर पहुँचती है। एक ओर "असीम जय जयकार" चल रहे थे और नीरू माँ सभी महात्माओं को दर्शन दे रहे थे। दूसरी ओर कैमरे पर क्या चल रहा है वह भी उन्हें पता था। और कोई पुराने महात्मा आए थे, वह भी उनकी दृष्टि के बाहर नहीं था।

टकोर के साथ-साथ नीरू माँ की सभी जगह ध्यान रखने की बात उस भाई को स्पर्श कर गई।

इस तरह काम से ज्यादा व्यक्ति के दिल को संभालने का महत्त्व ज्यादा है, यह बात नीरू माँ ने उस भाई को सिखा दी।

अडालज में Bmht और Lmht द्वारा गणेशचतुर्थी मनाई गई...

Akram Express

October 2017
Year : 5, Issue : 7
Conti. Issue No.: 55

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/17-19
valid up To 31-12-2019
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

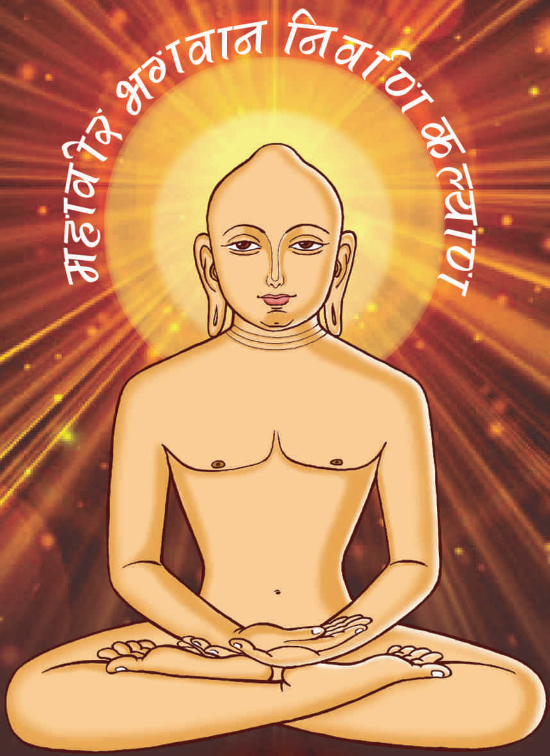

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **SMS** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Mr. Dimplebhai Mehta on behaif of Mahavideh Foundation
Printed at **Amba offset** :- Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad - 14 and published